AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | An Open Access & Indexed
Volume 06 | Issue 04 | April 2025 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 21-27

अयोध्या जिले में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच मूल्यों का अध्ययन

धर्मेन्द्र प्रताप सिंह [1], डॉ. रामप्रताप सैनी [2]

1. शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुड़ेला, झुंझुनूं, राजस्थान
2. असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, चुड़ेला, झुंझुनूं, राजस्थान

सारांश

करुणा, सत्यनिष्ठा और समाज के कल्याण के लिए दृढ समर्पण केवल वांछनीय गुण नहीं हैं, वे आवश्यक मानवीय मूल्य हैं जो एक सामंजस्यपूर्ण समुदाय की नींव बनाते हैं। एक शुद्ध हृदय, जिसमें सच्ची दयालुता, ईमानदार भाषण जो विश्वास को बढावा देता है, और अहिंसक कार्य जो शांति को बढावा देते हैं, संबंधों को पोषित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जब इन गुणों की कमी होती है, तो समाज को नुकसान होता है, जिससे कलह, अविश्वास और उस ताने–बाने में दरार आती है जो हमें एक साथ बांधता है। भारत, एक ऐसी भूमि है जो गहन आध्यात्मिक विरासत से भरी हुई है जिसने अनगिनत पीढियों को प्रेरित किया है, अब अधर्म और सामाजिक अन्याय की एक परेशान करने वाली लहर का सामना कर रही है। इसकी संस्कृति की जीवंत तान, जो कभी आस्था और नैतिक सिद्धांतों के धागों से बुनी गई थी, नैतिक पतन के बोझ तले दबी हुई लगती है। यह युवाओं की जिम्मेदारी है, जो कल के मशालवाहक हैं, कि वे प्राचीन ज्ञान और मूल्यों की लौ को फिर से जलाएँ। जैसे–जैसे भारत माता अपने बच्चों पर नजर रखती है, वह उनके दिलों में ईमानदारी और करुणा के पुनरुत्थान की लालसा करती है।

सूचक शब्दः छात्र, मूल्य शिक्षा, माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक।

परिचय

व्यक्तियों को समाज के प्रति करुणा, सत्यनिष्ठा और निस्वार्थ सेवा के मूल्यों को पूरे दिल से अपनाना चाहिए। यह आवश्यक है कि उनके विचार, शब्द और कार्य साहस और निडरता से भरे हों, ताकि वे चुनौतियों का डटकर सामना कर सकें। विशेष रूप से छात्रों पर भारत के प्राचीन गौरव, ज्ञान और सांस्कृतिक गहराई से समृद्ध विरासत को फिर से जगाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। जब भारत माता अपने पूर्व वैभव के खोने का शोक मना रही है, तो यह जरूरी है कि युवा उठ खडे हों और इन सिद्धांतों को अपनाकर उसकी गरिमा और समृद्धि को बहाल करें।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dharmendra Pratap Singh Research Scholar, Dept. of Education Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Jhunjhunu, Rajasthan E-mail: dharmendrapratap9415@gmail.com	

बचपन से ही भलाई का काम सीखना:

आधुनिक छात्रों को अक्सर अपने जीवन को बेहतर बनाने और व्यक्तिगत विकास हासिल करने की चाहत में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पडता है। यह स्थिति माता–पिता और शिक्षकों दोनों की सक्रिय भागीदारी के महत्वपूर्ण महत्व को रेखांकित करती है, जो छात्रों को उनकी शैक्षिक यात्रा के दौरान मार्गदर्शन करने और उनकी क्षमता और आकांक्षाओं को समझने में उनकी मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
आध्यात्मिक शिक्षा जीवन के लिए हैरू सांसारिक शिक्षा बुद्धि को तेज करती है, महानता का विकास करती है और हमारे आस–पास की दुनिया के बारे में हमारी समझ को बढाती है। इसके विपरीत, आध्यात्मिक शिक्षा हृदय को पोषित करती है, करुणा, सत्य और सहानुभूति जैसे गुणों को बढावा देती है, जो अंततः एक अधिक सामंजस्यपूर्ण और संतुलित अस्तित्व की ओर ले जाती है।

धनी व्यक्ति अक्सर सामाजिक कल्याण में योगदान देने के महत्व को अनदेखा कर देते हैं। इसके बजाय, उन्हें अच्छाई और करुणा को बढावा देने को प्राथमिकता देनी चाहिए, यह पहचानते हुए कि उनके संसाधन जरूरतमंदों के लिए सार्थक बदलाव ला सकते हैं।

मनुष्य को संगीतकार बनना चाहिए, कम्प्यूटर नहीं:

सांसारिक शिक्षा अक्सर स्वार्थ की भावना को बढावा देती है और व्यक्ति के पतन का कारण बन सकती है, क्योंकि यह व्यक्तिगत परिवर्तन की तुलना में जानकारी प्राप्त करने को प्राथमिकता देती है। इसके विपरीत, आध्यात्मिक शिक्षा में गहरा परिवर्तन लाने की शक्ति होती है, जो व्यक्तियों को गहरी समझ प्राप्त करने, करुणा को बढावा देने और जीवन में अपने वास्तविक उद्देश्य को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

मूल्य हमारे जीवन के सिद्धांत हैं:

मनुष्य पर अपने मूल्यों को बनाए रखने की बहुत बडी जिम्मेदारी है, क्योंकि उन्हें त्यागने से आत्म–विनाश हो सकता है। जानवरों के विपरीत, जो जीवित रहने और अधिक से अधिक भलाई के लिए बलिदान के कार्य करते हैं, आधुनिक समाज में कई व्यक्ति अक्सर अनैतिक व्यवहार में लिप्त रहते हैं, स्वार्थी लाभ के लिए अपनी ईमानदारी और अपने समुदायों के नैतिक ताने–बाने से समझौता करते हैं।

मूल्य का अर्थ:

भू–केन्द्रवादी मूल्यों को विशुद्ध बौद्धिक मूल्यांकन के बजाय मुख्य रूप से भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के रूप में देखते हैं। वे इन मूल्यों को तर्कसंगत प्रेरणाओं के रूप में देखते हैं, जो व्यक्तियों के जीवन को आकार देने और निर्देशित करने वाले मूलभूत सिद्धांतों में गहराई से निहित हैं। यह दृष्टिकोण हमारे निर्णय लेने और अंतर्निहित विश्वासों पर भावनाओं के गहन प्रभाव को उजागर करता है जो हमारे दैनिक कार्यों और विकल्पों को प्रेरित करते हैं।
मूल्यों के समावेश के लिए शैक्षिक आवश्यकतारू कोठारी आयोग ने ज्ञान के विस्तार के महत्व को इस प्रकार रेखांकित किया कि इससे न केवल बौद्धिक क्षितिज का विस्तार होगा, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी बढेगी, तथा साथ ही अधिक दयालु समाज के लिए व्यक्तियों के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में गहनता आएगी।

माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा प्रणाली:

जैसे–जैसे माता–पिता और समाज की भूमिकाएँ विकसित होती जा रही हैं, स्कूलों पर जिम्मेदारियों की एक व्यापक श्रृंखला बढती जा रही है। इस बदलाव के कारण राज्य सरकारों ने शैक्षिक परिणामों के लिए प्राथमिक जवाबदेही संभाली है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। इसके अतिरिक्त, संघीय और स्थानीय प्राधिकरण इस ढांचे के भीतर आवश्यक भूमिका निभाते हैं, स्कूलों का समर्थन करने और शैक्षिक अनुभवों को बढाने के लिए सहयोग करते हैं, अंततः छात्र सीखने और सामुदायिक जुडाव के लिए एक अधिक समग्र दृष्टिकोण को बढावा देते हैं।

मूल्य शिक्षाः

समाज में एक–दूसरे के प्रति बढता संदेह और शत्रुता जीवन के मूल तत्व के लिए एक बडा खतरा बन गई है। इन नकारात्मक दृष्टिकोणों का सामना करना और उन्हें मिटाने के लिए लगन से काम करना, सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व के लिए समझ और करुणा को बढावा देना जरूरी हो जाता है।

शिक्षा व्यक्तियों को आवश्यक ज्ञान से लैस करके और उनकी आलोचनात्मक सोच क्षमताओं को पोषित करके सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह प्रक्रिया छात्रों को सूचित, जिम्मेदार नागरिकों में बदल देती है, उन्हें सोच–समझकर निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाती है जो उनके व्यक्तिगत जीवन और वैश्विक समुदाय दोनों को लाभ पहुंचाते हैं, और एक अधिक न्यायसंगत और प्रबुद्ध समाज को बढावा देते हैं।

मूल्यों को अनेक महत्वपूर्ण तरीकों से वर्गीकृत और विभेदित किया जा सकता है, जो मानव व्यवहार पर उनकी विविध भूमिकाओं और प्रभावों को दर्शाता है।

1. नैतिक मूल्य
2. मानवीय मूल्य
3. नैतिक मूल्य
4. भौतिक मूल्य
5. सौंदर्य मूल्य
6. धार्मिक मूल्य
7. नागरिकता मूल्य
8. पर्यावरणीय मूल्य

शोध का महत्वः

इस व्यवस्था ने धीरे–धीरे बुद्धिजीवियों को उनकी सांस्कृतिक परंपराओं से दूर कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षित व्यक्ति उभर कर सामने आए, जिनके पास न केवल व्यापक ज्ञान था, बल्कि वे मजबूत चरित्र के भी उदाहरण थे। इस परिवर्तन ने उनके दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया, जिसने अंततः उनके विचारों और विश्वासों को गहन और स्थायी तरीके से प्रभावित किया।

शोध के उद्देश्य

वर्तमान जांच का प्राथमिक उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच मूल्यों पर अध्ययन करना है। वर्तमान शोध के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं

1. यह अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के छात्रों द्वारा रखे गए विविध मूल्यों पर गहराई से विचार करता है, तथा लिंगों के बीच महत्वपूर्ण अंतरों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह नैतिक विश्वासों, सामाजिक दृष्टिकोणों और व्यक्तिगत आकांक्षाओं जैसे क्षेत्रों की खोज करता है, तथा जटिल गतिशीलता को उजागर करता है।
2. यह शोध माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के विपरीत मूल्यों पर गहनता से विचार करता है, तथा यह पता लगाता है कि सूचना प्रबंधन के विभिन्न तरीके किस प्रकार उनके दृष्टिकोण, विश्वासों और व्यवहारों को प्रभावित करते हैं, तथा इस प्रकार शैक्षिक प्रथाओं और विद्यार्थी विकास के लिए व्यापक निहितार्थों पर प्रकाश डालता है।
3. नैतिक, आचारिक, मानवीय, भौतिक, सौंदर्यात्मक और धार्मिक आयामों के बीच विविध भेदों का अन्वेषण करें, जिनमें से प्रत्येक अद्वितीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो मूल्यों, विश्वासों और मानवीय अनुभव के जटिल ताने–बाने के बारे में हमारी समझ को आकार देता है।
4. यह अध्ययन कक्षा आठ और नौ में पढने वाले छात्रों के अलग–अलग मूल्यों पर गहराई से विचार करता है, तथा यह पता लगाता है कि ये अंतर उनके द्वारा चुने गए शिक्षण माध्यम से कैसे प्रभावित होते हैं। इन अंतरों का विश्लेषण करके, शोध का उद्देश्य छात्रों के मूल्यों पर शैक्षिक और सांस्कृतिक प्रभावों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है।
5. यह अध्ययन कक्षा आठवीं और नौवीं के माध्यमिक छात्रों द्वारा रखे गए विविध मूल्यों में अंतरों का व्यापक रूप से पता लगाता है। यह विशेष रूप से शहरी, ग्रामीण और आदिवासी पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों के बीच इन भिन्नताओं की जांच करता है, जिसका उद्देश्य यह समझना है कि उनके पर्यावरण उनके दृष्टिकोण और विश्वासों को कैसे प्रभावित करते हैं।

6. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच विविध नैतिक और नैतिक मूल्यों की समझ और मान्यता की जांच करें, तथा पता लगाएं कि ये सिद्धांत उनके निर्णय लेने और सामाजिक अंतःक्रियाओं को कैसे प्रभावित करते हैं।

परिकल्पनाएँ:

परिकल्पना एक दावा या शिक्षित अनुमान है जिसे प्रयोग और अवलोकन के अधीन किया जा सकता है, जिससे शोधकर्ता कठोर परीक्षण के माध्यम से इसे सत्य या असत्य साबित करके इसकी वैधता निर्धारित कर सकते हैं।

वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिकल्पना तैयार की है:

- माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच उनके लिंग के संबंध में मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच उनके लिंग के संबंध में नैतिक मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच उनके लिंग के संबंध में भौतिक मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच उनके लिंग के संबंध में सौंदर्य मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच उनके लिंग के संबंध में धार्मिक मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच उनके लिंग के संबंध में नागरिकता मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच उनके लिंग के संबंध में पर्यावरणीय मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच उनके लिंग के संबंध में नागरिकता मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक विद्यालयों में उनके जन्म के संबंध में नैतिक मूल्यों के प्रति कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
- माध्यमिक विद्यालयों में उनके जन्म के संबंध में मानवीय मूल्यों के प्रति कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

नमूना विश्लेषण:

डेटा विश्लेषण सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो जटिल जानकारी से सार्थक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए रीढ की हड्डी के रूप में कार्य करता है। इस प्रक्रिया में वस्तुनिष्ठ डेटा का सावधानीपूर्वक स्कोरिंग और सारणीबद्ध करना शामिल है, जहाँ शोधकर्ता अपने निष्कर्षों को सारांशित करने और व्याख्या करने के लिए माध्य, माध्यिका और मानक विचलन जैसे सांख्यिकीय उपायों का उपयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त, इन परिणामों को मान्य करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय परीक्षणों का उपयोग किया जाता है, जिससे शोधकर्ता आत्मविश्वास के साथ निष्कर्ष निकाल सकते हैं। इन अंकों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करके, शोधकर्ता न केवल अपने निष्कर्षों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं, बल्कि सामाजिक मूल्यों को बढाने और दबाव वाले मुद्दों को संबोधित करने के उद्देश्य से कार्रवाई योग्य सुधार भी प्रस्तावित कर सकते हैं।

परिणाम

- ✓ केंद्रीय प्रवृत्ति के सांख्यिकीय माप दिलचस्प जानकारी प्रकट करते हैं। औसत 165.84 पर है, जबकि माध्यिका 174.5 पर थोडी अधिक है, और मोड 191.82 पर चरम पर है। यह वितरण एक सूक्ष्म प्रवृत्ति का सुझाव देता है, जो दर्शाता है कि अधिकांश मान उच्च अंत के आसपास क्लस्टर होते हैं, जो पूरे डेटा सेट में थोडा तिरछापन दिखाते हैं।

- ✓ 165.84 का औसत स्कोर बताता है कि प्रतिभागियों के पास विषय वस्तु के बारे में आम तौर पर अनुकूल राय है। यह औसत स्कोर सर्वेक्षण किए गए विषयों के बीच सकारात्मक आम सहमति को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, परिवर्तनशीलता के उपाय प्रतिक्रियाओं के वितरण में और अधिक जानकारी प्रदान करते हैं। 12.92 के कर्टोसिस विचलन के साथ, डेटा वितरण में एक महत्वपूर्ण शिखर को इंगित करता है, जबकि 17.6 का मानक विचलन स्कोर के मध्यम प्रसार को प्रकट करता है, जो उत्तरदाताओं के बीच विविध राय का सुझाव देता है।
- ✓ 169.5 का माध्य मान 165.84 के माध्य से अधिक है, जो यह दर्शाता है कि आंकडों का वितरण विषम है, जिसमें उच्च मानों का संकेन्द्रण माध्य को ऊपर की ओर खींचता है, जो संभावित आउटलाइर्स या विषमता को दर्शाता है।
- ✓ –0.62 का तिरछापन मान डेटा में नकारात्मक तिरछापन दर्शाता है, जो यह दर्शाता है कि स्कोर पैमाने के उच्च अंत में अधिक क्लस्टर होते हैं। यह वितरण प्रतिभागियों के बीच आम तौर पर सकारात्मक प्रदर्शन को दर्शाता है, जहां कम व्यक्तियों ने कम स्कोर हासिल किए। नतीजतन, अधिकांश स्कोर ऊपरी सीमा की ओर केंद्रित होते हैं, जो एक समग्र सफल परिणाम को दर्शाता है।
- ✓ 0.284 का कर्टोसिस मान लेप्टोकर्टिक वितरण को दर्शाता है, जिसका अर्थ है कि डेटा बिंदु माध्य के आसपास केंद्रित हैं। यह पैटर्न बताता है कि सर्वेक्षण किए गए विषयों ने मुख्य रूप से अनुकूल राय साझा की, जिसमें भावनाओं की व्यापक विविधता के बजाय अधिक चरम सकारात्मक प्रतिक्रियाओं की ओर झुकाव था।
- ✓ 0.08 का अनुपात मान बताता है कि पुरुष और महिला छात्रों के बीच शैक्षणिक प्रदर्शन या अन्य मापे गए मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह निष्कर्ष इस धारणा को स्वीकार करने की ओर ले जाता है कि लिंग छात्र परिणामों को प्रभावित करने, शैक्षिक वातावरण में समानता और निष्पक्षता को बढावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है।
- ✓ अंग्रेजी और तेलुगु दोनों माध्यमों में पढने वाले छात्रों के लिए महत्वपूर्ण अनुपात 0.58 है, जो 1.96 की स्थापित सीमा से काफी नीचे है। इससे पता चलता है कि उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाली कुछ अंतर्निहित चुनौतियाँ हो सकती हैं, जिसके लिए उनके शैक्षिक परिणामों और समग्र सीखने के अनुभवों को प्रभावित करने वाले कारकों की बारीकी से जाँच करना जरूरी है।
- ✓ महत्व स्तर पर 14.27 का परिकलित एफ–अनुपात 4.78 के महत्वपूर्ण तालिका मान से उल्लेखनीय रूप से अधिक है। यह पर्याप्त विसंगति बताती है कि विश्लेषण किए जा रहे समूहों के बीच विचारों में महत्वपूर्ण अंतर हैं। इस तरह के निष्कर्ष का तात्पर्य है कि देखे गए बदलाव यादृच्छिक संयोग के कारण नहीं हैं, बल्कि सार्थक अंतरों को दर्शाते हैं जो अध्ययन के संदर्भ में आगे की जांच और विचार की मांग करते हैं।
- ✓ महत्व स्तर पर 4.78 के महत्वपूर्ण तालिका मान की तुलना में 13.91 का परिकलित एफ–अनुपात उल्लेखनीय रूप से अधिक है। यह पर्याप्त विसंगति बताती है कि विभिन्न पृष्ठभूमि या समूहों के बच्चों के बीच विचारों में महत्वपूर्ण अंतर हैं। इस तरह के निष्कर्ष बच्चों द्वारा रखे गए विविध दृष्टिकोणों को उजागर करते हैं, उनके दृष्टिकोणों का विश्लेषण करते समय इन अंतरों को पहचानने के महत्व पर बल देते हैं। यह डेटा न केवल बच्चों के विविध अनुभवों पर प्रकाश डालता है बल्कि उनकी राय को समझने में अनुकूलित दृष्टिकोणों की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है।

निष्कर्ष

वर्तमान शोध के आंकड़ों के विश्लेषण के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये हैं:–

- मूल्य वाले छात्र अच्छा व्यवहार करते हैं।
- छात्र भौतिकवादी होते हैं।
- नैतिक शिक्षा आत्म–नियंत्रण विकसित करती है।

- छात्र ईमानदारी से सौंपे गए काम को पूरा करते हैं।
- छात्र घर पर माता–पिता की मदद करते हैं।
- छात्र राष्ट्रीय त्योहारों के उत्सव में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
- छात्र बीमारियों से बचने के लिए स्वच्छता के अपने ज्ञान का उपयोग करते हैं।
- छात्र शिक्षा के लिए विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है।
- छात्र सभा में व्यवस्था का पालन करते हैं।
- छात्र समूह खेलों और खेलों में नियमों और विनियमों का पालन करते हैं।
- छात्र शिक्षकों का सम्मान करते हैं।
- छात्र खाने से पहले और बाद में हाथ धोते हैं।
- छात्र वर्दी पहनना पसंद करते हैं।
- छात्र दिन में दो बार।
- विद्यार्थी रुचिपूर्वक गृहकार्य करते हैं।
- विद्यार्थी सुबह जल्दी उठते हैं।
- विद्यार्थी वस्तुओं को सुंदर ढंग से सजाते हैं।
- विद्यार्थी साफ कपडे पहनना पसंद करते हैं।
- विद्यार्थी वस्तुओं को देखने में प्रसन्नता महसूस करते हैं।
- विद्यार्थी स्थानों पर जाने में रुचि रखते हैं।
- विद्यार्थी सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं।
- विद्यार्थी अन्य धर्मों का सम्मान करते हैं।
- विद्यार्थी अपने देश के नागरिक होने पर गर्व महसूस करते हैं।
- विद्यार्थी अपने अधिकारों का आनंद लेते हैं।
- विद्यार्थी राष्ट्रगान का सम्मान करते हैं।
- विद्यार्थी सभा में शपथ लेते हैं।
- विद्यार्थी राष्ट्रीय भावना के साथ रहते हैं।
- विद्यार्थी विद्यालय में उद्यान विकसित करते हैं।
- विद्यार्थी सौर ऊर्जा का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
- विद्यार्थी स्वस्थ वातावरण पसंद करते हैं।

सुझाव

- सरकार को माध्यमिक विद्यालयों के स्कूली पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को शामिल करना चाहिए।
- शिक्षकों को चाहिये कि वो अपने छात्रों के लिए अपने कार्यों एवं शिक्षण के माध्यम से आदर्श बने।
- सभी छात्रों को भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम के दस सूत्रों का अभ्यास करना चाहिए।
- सभी माध्यमिक विद्यालयों को मूल्यों पर स्कूल स्तर पर सेमिनार और प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।
- मीडिया को बेहतर समाज के लिए विभिन्न मूल्यों को बेहतर बनाने के लिए प्राथमिक कदम उठाने चाहिए।

शोध सीमाएँ

यह शोध आठ विशिष्ट मूल्यों पर गहनता से विचार करता है जो छात्रों के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण हैंरू नैतिक, मानवीय, नैतिक, भौतिक, सौंदर्य, धार्मिक, नागरिकता और पर्यावरण। शहरी स्कूलों में कक्षा आठ और नौ के 204 छात्रों के बीच किए गए इस अध्ययन में इन मूल्यों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है, जो एक संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निष्कर्ष बताते हैं कि शैक्षणिक संस्थानों को इन मूल्यों को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करने की तत्काल आवश्यकता है, ताकि दैनिक जीवन में उनके महत्व की अधिक व्यापक समझ विकसित हो और युवाओं में जिम्मेदार नागरिकता और पर्यावरण संरक्षण को बढावा मिले।

संदर्भ

1. **डी.ई., डी.के. (1974),** "पश्चिम बंगाल के कुछ स्कूलों के हाई स्कूल के लडकों के मूल्यों का एक अध्ययन", पीएच.डी, एडु, कल.यू.1974.
2. **पटेल, के.एम. (1981),** "सत्यसाई संगठन द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थानों में मूल्य–उन्मुखीकरण का एक अध्ययन" पीएच.डी. एडु, एसपीयू, 1981.
3. **सीनियर स्टेला अन्ना लोबू, (1983),** "संस्थागत दक्षता के संदर्भ में सिद्धांतों में प्रकट मूल्यों का एक अध्ययन पीएच.डी., शिक्षा, एमएसयू., 1983.
4. **अन्नाम्मा, ए.के. (1984),** "केरल में कॉलेज के छात्रों की मूल्य आकांक्षा और समायोजन", पीएच.डी. मनोविज्ञान. केरु., 1984.
5. **बनुई, कुओत्सु (1992),** "नागालैंड में कॉलेज के छात्रों के मूल्यों का उनके आत्म अवधारणा के संबंध में एक अध्ययन" पीएच.डी., शिक्षा, नॉर्थईस्टर्न–हिल यूनिवर्सिटी

■ ■ ■